दिसम्बरः 2021 वर्ष : 5 अंक : 3

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

आप सभी को क्रिसमस पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई।

प्रेम और सोहार्द का त्योहार, क्रिसमस का इतिहास कई हजार साल पुराना है। ईसाई धर्म की धार्मिक पुस्तक बाइबिल के अनुसार ईसाई धर्म के प्रमुख भगवान ईसा मसीह का इसी दिन जन्म हुआ था इसलिए इस त्योहार को मनाया जाता है। ऐसा भी माना जाता है कि ईसा मसीह के जन्म से पहले ही यह भविष्यवाणी कर दी गई थी कि धरती पर एक ईश्वर पुत्र जन्म लेगा जो पूरी दुनिया को कष्ट से मुक्ति दिलवाएगा और लोगों का सही मार्गदर्शन कर सही रास्ते पर चलने की शिक्षा देगा और पूरी दुनिया का उद्धार करेगा। क्रिसमस त्योहार पर सबसे ज्यादा महत्व क्रिसमस ट्री का होता है। इस दिन पेड़ों को सजाने की परंपरा सालों से चली आ रही है क्योंकि क्रिसमस ट्री को जीवन की निरंतरता का प्रतीक माना जाता था।

हालांकि वर्ष 2021 की तरफ मुड़ कर देखा जाय तो हम यही महसूस करेंगे कि कोरोना महामारी ने वैश्विक तौर पर सभी के जीवन को कितना गंभीर तौर पर प्रभावित किया है। प्रसिद्ध अमेरिकी कवि और दार्शनिक, राल्फ वाल्डो इमर्सन का कथन, "भय दुनिया में किसी भी और चीज से अधिक लोगों को परास्त करता है।" कोरोना माहामारी के संदर्भ में बहुत हद तक सत्य प्रतीत होता है। आज इस महामारी के कारण लोगों में एक अज्ञात भय व्याप्त हो चुका है जो उनके समग्र विकास को प्रतिकूल तौर पर प्रभावित कर रहा है। कोरोना अब तब करोड़ों लोगों की आजीविका का साधन छीन चुका है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अर्थात एक दूसरे से मेल मिलाप, सुख और दुख बांटना एक नैसर्गिक तथा मानवीय प्रकृति और प्रवृत्ती है पर इस कोरोना महामारी ने हम सभी को एकांत जीवन व्यतीत करने पर मजबूर किया है जिससे लोगों पर एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा है; उनमें एक हताशा और नैराश्य की भावना घर कर गई है। हम सभी यही चाहते हैं कि आने वाला वर्ष हम सभी के लिए एक खुशी और सुख का संदेश लेकर आए और हमारे सामाजिक जीवन का पुनरुत्थान हो।

प्रस्तुत अंक में नवम्बर 2021 में संस्थान की गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रस्तुत किया गया है

अंत में, मैं आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

(बसन्त कुमार दास)

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

संस्थान ने 26 अक्टूबर से 1 नवंबर 2020 के दौरान "सतर्कता जागरूकता सप्ताह" मनाया, जिसमें "स्वतंत्र भारत@75: अखंडता के साथ आत्मनिर्भरता" पर ध्यान केंद्रित करते हुए कोविड 19 प्रोटोकॉल मानते हुए कार्यक्रम किया गया। संस्थान के निदेशक द्वारा 26 अक्टूबर को अधिकारियों और कर्मचारियों को शपथ दिलाने के साथ सप्ताह भर चलने वाले अनुष्ठान की शुरुआत की गई। कई कर्मचारियों ने ई-शपथ भी लिया। भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों और भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाने के लिए परिसर में बड़ी संख्या में पोस्टर, बैनर, तख्तियां प्रदर्शित की गईं। अगले दिन सभी कर्मचारियों ने भ्रष्टाचार से लड़ने में एकता दिखाते हुए मानव श्रृंखला बनाई। धोखाधड़ी/भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने के लिए और आम जनता को जागरूक करने के लिए मानव श्रृंखला के बाद स्थानीय नौका घाट तक पैदल यात्रा की गई, जो एक व्यस्त आवागमन स्थल है। इस पैदल यात्रा (वॉकथॉन) ने स्थानीय लोगों और यात्रियों में काफी रुचि जगाई।

28 अक्टूबर 2021 को सतर्कता पर केंद्रित एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों तरह से आयोजित किया गया था। 29 अक्टूबर 2021 को छात्रों, युवा पेशेवरों और अन्य संविदा कर्मचारियों के लिए एक आशु भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। सभी ने

शानदार ढंग से अपने मन की बात कही। उसी दिन दोपहर में इन-हाउस सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजीव लाल, संयुक्त निदेशक (प्रशासन)-सह- रजिस्ट्रार ने संस्थान में सतर्कता और भ्रष्टाचार विरोधी उपायों पर व्याख्यान दिया। सप्ताह भर चलने वाले इस उत्सव का समापन 1 नवंबर 2021 को समापन समारोह के माध्यम से हुआ जिसमें श्री जयदेवन ए., आईपीएस, अधीक्षक, पुलिस और एचओबी, ईओ-IV, सीबीआई, कोलकाता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने नैतिक आचरण, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए एक विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के. दास ने भ्रष्टाचार मुक्त संगठन के लिए पारदर्शिता और सतर्कता के महत्व पर चर्चा की। संस्थान के सतर्कता अधिकारी डॉ. अरुण पंडित ने स्वागत भाषण दिया और सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान की गई गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का समापन डॉ. एस.के. नाग, प्रमुख, एफआरएआई डिवीजन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में गंगा उत्सव- 2021 का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में दिनांक 1 से 3 नवंबर, 2021 के दौरान ‘ गंगा उत्सव- 2021’ मनाया गया। गंगा पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण की दिशा में स्वच्छ गंगा राष्ट्रीय मिशन द्वारा वित्त पोषित 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के तहत संस्थान द्वारा मछलियों की रैंचिंग, जन जागरूकता कार्यक्रम और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। संस्थान गंगा नदी में

मछलियों के स्टॉक को पुनरुद्धार करने और मत्स्य प्रजातियों, हिलसा प्रजाति तथा नदीय डॉल्फ़िन के संरक्षण और गंगा नदी को स्वच्छ बनाने के लिए व्यापक तौर एक पायलट परियोजना के तहत देश के चार अलग-अलग राज्यों के 18 सैंपलिंग स्थलों पर कार्य कर रहा है। विश्व भर में नदी संरक्षण की दिशा में नदी उत्सव का आयोजन एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। इसी क्रम में जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार प्रति वर्ष गंगा उत्सव का आयोजन करता रहा है। गंगा उत्सव का मुख्य उद्देश्य हितधारकों की सक्रिय और सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के साथ गंगा नदी और इसकी मात्स्यिकी के पुनरुद्धार में "जनभागीदारी" को बढ़ावा देना है। इस उत्सव में गंगा नदी की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत जैसे पहलुओं के साथ गंगा नदी के वर्तमान परिदृश्य को प्रदर्शित करना है। सिफ़री ने भी नमामि गंगे, जल शक्ति मंत्रालय के साथ इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों, हिल्सा और नदी डॉल्फिन संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने के साथ गंगा उत्सव-2021 को भव्य तरीके से आयोजित किया है।

इस कार्यक्रम के तहत दिनांक 1 नवंबर 2021 को गंगा उत्सव कार्यक्रम में रामकृष्ण मिशन के कुलपति, विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान और स्थानीय और सहकारी समिति के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का आरंभ गंगा आरती के साथ हुआ। इसके बाद, संस्थान के निदेशक, डॉ. बसंत कुमार दास ने स्थानीय मछुआरों से गंगा नदी की मछलियों और नदीय डॉल्फ़िन के संरक्षण तथा पुनरुद्धार गंगा के स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के बेलूर मठ घाट पर एक लाख से अधिक मछली प्रजातियों (रोहू, कतला और मृगल) के जर्मप्लाज्म को गंगा नदी में छोड़ा गया।

दिनांक 2 नवंबर 2021 को पश्चिम बंगाल के त्रिवेणी से बैरकपुर तक गंगा नदी में जन जागरूकता अभियान चलाया गया गया। कार्यक्रम में कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए विभिन्न घाटों पर मास्क व सैनिटाइजर का भी वितरण किया गया। इस उत्सव के समापन के दिन, दिनांक 3 नवंबर, 2021 को संस्थान मुख्यालय में क्विज, बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता तथा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने मनाया गंगा उत्सव 2021

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत 1-3 नवंबर, 2021 के दौरान गंगा उत्सव 2021 मनाया और विभिन्न गतिविधियों का प्रदर्शन किया। 1 नवंबर 2021 को हनुमान मंदिर से संगम तक , 'गंगा मशाल' दौर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और कार्यक्रम के अंत में जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। रामघाट पर गंगा आरती और दीपदान किया गया और 2 नवंबर 2021 को गंगा प्रतिज्ञा भी ली गई। अंतिम दिन अर्थात 3 नवंबर 2021 को गंगा गोष्ठी (सम्मेलन) का आयोजन मिंटो पार्क, प्रयागराज में किया गया ताकि गंगा को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखने के लिए लोगों को जागरूक किया जा सके। पूरे कार्यक्रम का आयोजन

नमामि गंगे, गंगा विचार मंच, जिला गंगा समिति, गंगा टास्क फोर्स और उत्तर प्रदेश के वन विभाग के सहयोग से किया गया। अलग-अलग जगहों में अलग-अलग वक्ताओं ने एकत्रित जनसमूह को संबोधित किया। डॉ. धर्म नाथ झा (प्रभारी वैज्ञानिक), डॉ. अबसर आलम (वैज्ञानिक), डॉ. कल्पना श्रीवास्तव (मुख्य तकनीकी अधिकारी), श्री साकेत कुमार श्रीवास्तव (मुख्य तकनीकी अधिकारी), श्री विजय कुमार (वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी), डॉ. संदीप कुमार मिश्रा (वाईपी-II), श्री सुशील कुमार वर्मा (YP-II), श्री शिव जन्म वर्मा (YP-I) और सभी अन्य कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और इस कार्यक्रम के आयोजन में मदद की।

मत्स्य पकड़ अनुमान लगाने के तरीके" पर प्रशिक्षण सह-कार्यशाला

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 8 नवंबर 2021 को भारत के विभिन्न राज्य मत्स्य विभाग के अधिकारियों के लिए "अंतर्स्थलीय खुले जल निकायों के लिए मत्स्य पकड़ अनुमान लगाने के तरीके" पर एक दिवसीय आभासी प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला आयोजित की। कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न अन्तर्स्थलीय खुले जल निकायों जैसे जलाशय, आर्द्रभूमि और नदी आदि में मछली पकड़ने के आकलन के लिए नमूनाकरण विधियों और उनके कार्यान्वयन की बुनियादी समझ प्रदान करना था। संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दासने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और देश के मछली पकड़ने के परिदृश्य और कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी।

डॉ मलय नस्कर, प्रधान वैज्ञानिक ने ज्वार्नद मुख, आर्द्रभूमि, जलाशय, नदी से मत्स्य पकड़ने के आकलन पर विस्तृत व्याख्यान दिया है। उन्होंने सभी प्रकार के खुले जल निकायों के लिए मछली पकड़ने के परिदृश्य के विभिन्न पहलुओं और उनकी संबंधित पकड़ अनुमान रणनीतियों के बारे में बताया। कुछ विशिष्ट क्षेत्र में मत्स्य पकड़ने की एक अनूठी विधि आर्टिसनल(शिल्पीय) मत्स्य पकड़,को कार्यक्रम में अच्छी तरह से समझाया गया था। व्याख्यान के बाद विभिन्न जल निकायों के लिए मछली पकड़ने के आकलन के व्यावहारिक अभ्यास के लिए एक एक्सेल शीट की भी प्रस्तुति दी गई। प्रतिभागियों के लिए उनकी समस्याओं और उनके क्षेत्र में मछली पकड़ने के अनुमान से संबंधित प्रश्नों और प्रतिक्रिया के बारे में चर्चा करने के लिए एक इंटरैक्टिव सत्र था। कार्यक्रम जूम प्लेटफॉर्म के माध्यम से आयोजित किया गया था और भारत के विभिन्न मत्स्य पालन राज्य विभागों (हरयाणा, छत्तीसगढ़, बिहार, असम, तमिलनाडु, केरल,हिमाचल प्रदेश, गोवा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम आदि) के लगभग 35 प्रतिभागियों और कार्यक्रम में 15 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। अंत में डॉ. वी.वी. सुगुनन, सलाहकार खाद्य और कृषि संगठन, ने सभी प्रतिभागियों को अपनी टिप्पणी और बहुमूल्य सुझाव दिए। औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

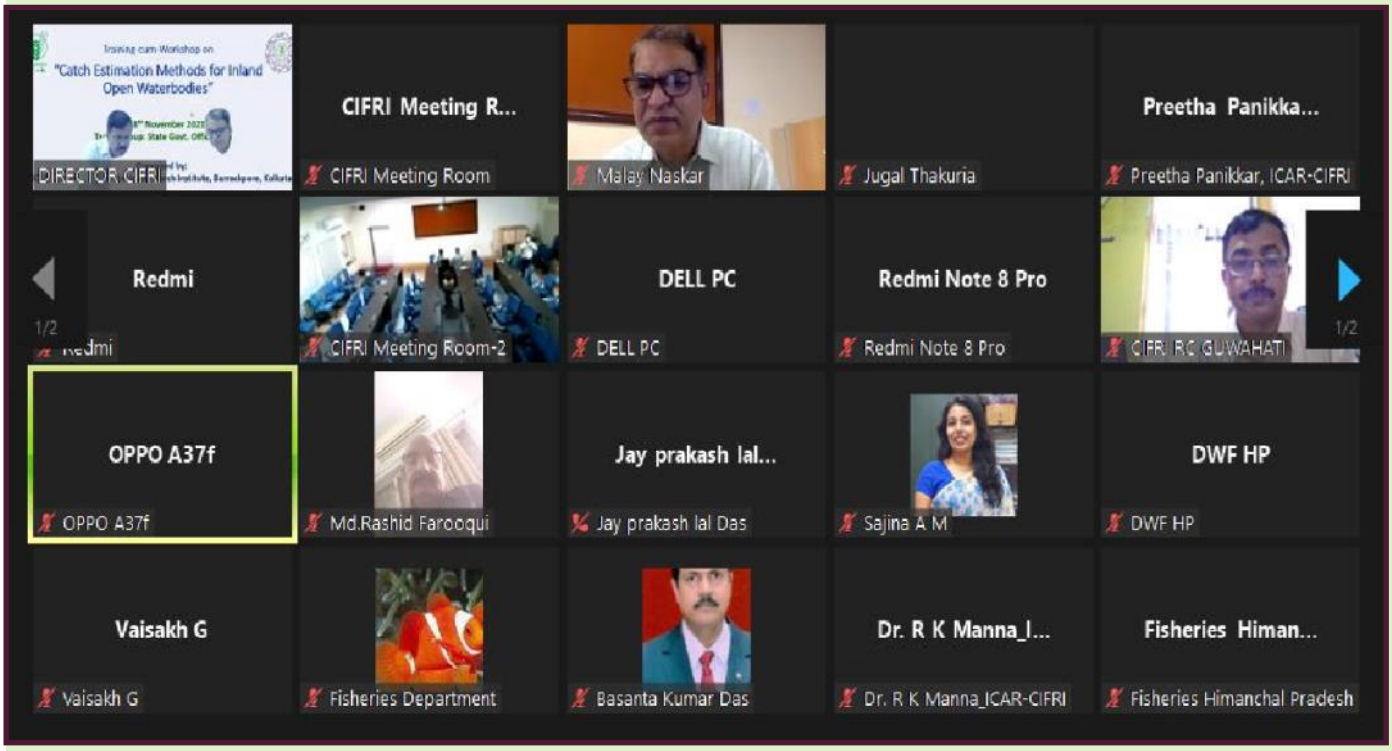

आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष में सिफ़री द्वारा राजा आर्द्रभूमि, पश्चिम बंगाल में जलवायु प्रतिरोधी अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर अभियान

आर्द्रभूमि स्वदेशी मछली प्रजातियों का प्रजनन स्थल, बाढ़ के जल का भंडारण और घरेलू पशुओं के चरागाह के रूप में कार्य करती है। इसके अलावा, यह परितंत्र में उपस्थित कार्बन तत्वों को सोखने के साथ, पारिस्थितिकी पर्यटन और आजीविका सुरक्षा भी प्रदान करती है। जलवायु में होने वाली निरंतर परिवर्तन और बढ़ते मानवजनित गतिविधियों के कारण आर्द्रभूमि की जलीय पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन पर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है। इसी क्रम में, पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले में स्थित राजा आर्द्रभूमि का सर्वेक्षण किया गया। इसमें यह देखा गया कि जलवायु विसंगतियों और शहरीकरण के कारण राजा आर्द्रभूमि की पारिस्थितिकी बहुत प्रभावित हुई है। इस कारण से इसकी मत्स्य उपज अनियमित और परिणामस्वरूप मछुआरों को आजीविका असुरक्षा का सामना करना पड़ता है।

इस समस्या के निदान की दिशा में भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष में राष्ट्रीय जलवायु अनुकूल कृषि पहल परियोजना(निक्रा) के तहत जलवायु लचीला अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर जागरूकता बढ़ाने के लिए 06 नवंबर 2021 को पश्चिम बंगाल के राजा आर्द्रभूमि (जिला उत्तर 24 परगना) में एक राष्ट्रीय अभियान का आयोजन किया। यह कार्यक्रम डॉ बि के दास, निदेशक, सिफ़री, बैरकपुर के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया तथा डॉ यू. के. सरकार, प्रधान अन्वेषक, निक्रा-राष्ट्रीय जलवायु अनुकूल कृषि पहल परियोजना और प्रभागाध्यक्ष, जलाशय एवं आर्द्रक्षेत्र मात्स्यिकी द्वारा समन्वयित किया गया था। इस कार्यक्रम में निक्रा परियोजना के सह-समन्वयक, डॉ. लियांथुआमलुआइया, वैज्ञानिक तथा शोधार्थियों की उपस्थिति में स्थानीय मछुआरों के साथ जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने तथा अन्य कार्य योजनाओं पर एक पारस्परिक संवाद आयोजित किया गया जिसमें मछुआरों को पेन और पिंजरे में मछली पालन जैसी जलवायु लचीला स्मार्ट मत्स्य पालन के बारे में जागरूक किया गया। इस अभियान में लगभग 20 मछुआरों ने भाग लिया।

गंगासागर के चक्रवात प्रभावित अनुसूचित जाति और जनजाति के मछुआरों की आय दोगुनी करने हेतु संस्थान के प्रयास

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, सुंदरबन के सागर द्वीप में चक्रवात पीड़ित अनुसूचित जाति और जनजाति के

मछुआरों को सहायता के लिए सदैव ही तत्पर रहा है। संस्थान मछुआरों के आजीविका उन्नयन हेतु वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से उनकी आय को दोगुना करने के लिए इन किसानों को मछली बीज, चूना, चारा और दवा आदि सामग्री प्रदान करता रहा है।इस क्रम में संस्थान ने दिनांक 10 नवंबर 2021 सागर द्वीप में गंगासागर के 14 गांवों और पांच ग्राम पंचायतों के लाभार्थियों (350 मछुआरे) को दो स्थानों, जिबोंतला (150 मछुआरे) और कृष्णानगर (200 मछुआरे) को एकत्रित किया गया। इन मछुआरों को लगभग 36 टन मछली फ़ीड, 100 लाख मछली बीज और मछलियों के लिए 200 मिलीलीटर वाली 350 दवाईयां दी गईं। किसानों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक, डॉ. बि के दास ने वैज्ञानिक विधि द्वारा मछली पालन से किसानों की आय को दोगुना करने और प्राप्त सामग्री का उचित उपयोग करने पर जोर दिया।

अनुसूचित जाति और जनजाति कार्यक्रम के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. ए के दास, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. पी के परिदा, वैज्ञानिक ने मछली उत्पादन और मछुआरों की आय को दोगुना करने संबंधित तकनीकी विवरण पर विस्तृत चर्चा की। श्रीमती नमिता हाजरा, पंचायत प्रधान, रुद्रनगर, सागर द्वीप ने संस्थान के प्रयासों की सराहना की और किसानों को अपनी आय बढ़ाने के लिए प्राप्त संसाधनों के उचित उपयोग पर सलाह दिया। इस कार्यक्रम के माध्यम से मछुआरों को लाभ के साथ उनका आर्थिक स्तर में भी सुधार होगा। निदेशक महोदय ने श्री बंकिम हाजरा, माननीय मंत्री, सुंदरबन क्षेत्र विकास, पश्चिम बंगाल सरकार को गंगासागर के मछली किसानों के विकास के लिए सिफ़री के पहल और कार्य योजनाओं के बारे में अवगत कराया। कार्यक्रम का आयोजन स्वामी विवेकानंद युवा एवं सांस्कृतिक समिति, सागर और सिफ़री द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), ने भाकृअनुप –केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, प्रयागराज में 'मत्स्यलोक गेस्ट हाउस' का उद्घाटन किया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान) डॉ. जॉय कृष्ण जेना ने 15 नवंबर 2021 को भाकृअनुप–केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज में पांच कमरों वाले गेस्ट हाउस का उद्घाटन किया। संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास भी इस अवसर पर उपस्थित थे। मत्स्य पालन क्षेत्र में कर्मरत लोगों की सेवा के लिए इस गेस्ट हाउस का उद्घाटन किया गया और 'मस्त्यलोक' नाम दिया गया। उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान) ने क्षेत्रीय केंद्र के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को संबोधित किया और मत्स्य पालन और मछुआरों के विकास के लिए बेहतर शोध के लिए प्रेरित किया। उन्होंने केंद्र पर आने वाले लोगों की मदद और स्नेहपूर्ण सेवा करने का भी सुझाव दिया। संस्थान के निदेशक ने वैज्ञानिकों को महत्वपूर्ण शोध कार्य करने के लिए प्रोत्साहित और निर्देशित भी किया ताकि अधिक से अधिक लोग मत्स्य क्षेत्र से संबंधित जानकारी के लिए संस्थान में आ सकें। इस कार्यक्रम में डॉ. अर्चन कांति दास, प्रधान वैज्ञानिक भी शामिल हुए। उन्होंने केंद्र के कर्मियों को समाज के लिए और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित किया। केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. धर्म नाथ झा ने केंद्र में आए सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और केंद्र की गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर डॉ. अबसार आलम, डॉ. वेंकटेश, श्री जीतेन्द्र कुमार, श्री श्रवण कुमार शर्मा सहित केंद्र के अन्य कर्मचारी भी उपस्थित थे।

संस्थान के प्रयागराज केन्द्र द्वारा गंगा नदी में तीस हजार मत्स्य बीजों को छोड़ा गया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज ने दिनांक 15 नवम्बर 2021 को पवित्र गंगा और यमुना के संगम तट पर गंगा नदी में विलुप्त हो रही मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए गंगा नदी में रैंचिंग कार्यक्रम के तहत 30000 (तीस हजार) भारतीय प्रमुख कार्प मछलियों -कतला, रोहू, मृगल मछलियों के अंगुलिकाओं को छोड़ाया। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन एम सी जी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के केन्द्र प्रमुख, डा० डी एन झा ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया तथा गंगा नदी के बारे में संक्षिप्त रूप में बताया। संस्थान के निदेशक, डा० बसंत कुमार दास ने सभा को नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी जिसके अन्तर्गत पुरे गंगा नदी में कम हो रही महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के बीज का रैंचिंग किया जाना चाहिए, साथ ही लोगो को गंगा के जैव विविधता और स्वच्छता के बारे में जागरूक करना है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, डा० जयकृष्ण जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने समारोह को सम्बोधित करते हुए गंगा नदी में मछली और रैंचिंग के महत्व तथा मछुआरों के आजीविका बढ़ाने के उपायों को बताया। इस कार्यक्रम में मछुआरों को मछली पकड़ने के लिए जाल वितरित किया। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि, श्रीमती कविता त्रिपाठी (समाज सेविका) ने नदी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होने गंगा को स्वच्छ रखने एवम जैव विविधता को बचाने के लिए उपस्थित लोगो से आह्वान किया तथा संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तिकाओं का विमोचन किया। इस अवसर पर नमामि गंगे के संयोजक गंगा विचार मंच (राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन) एवं नगर गंगा समिति, प्रयागराज के सदस्य, श्री राजेश शर्मा ने गंगा को स्वच्छ रखने के लिए सभी को शपथ दिलाया तथा अन्य वक्ताओं ने सभा को सम्बोधित किया और गंगा के प्रति जागरूक होने के साथ ही गंगा को स्वच्छ रखने का संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम में नमामि गंगे (गंगा विचार मंच), भारतीय वन्यजीव संस्थान, गंगा प्रहरी, नगर गंगा समिति, माँ गंगा सेवा समिति, तीर्थयात्री, आस-पास गांवों के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लागों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त में संस्थान के वैज्ञानिक, डा० अबसार आलम ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए आश्वस्त किया कि समाज के सभी लोगों की भागीदारी से हम इस परियोजना के उद्देश्यों को पाने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक, अधिकारी तथा शोधार्थियों ने भाग लिया।

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने एसटीसी और एससीएसपी कार्यक्रम के तहत झारखंड के मछुआरों को आजीविका सहायता प्रदान की

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदायों के मछुआरों को मात्स्यिकी पालन से जुड़े ज्ञान प्रदान करने के माध्यम से उनकी आजीविका में सुधार के लिए अपना समर्थन प्रदान किया। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति कार्यक्रम के तहत झारखंड के विभिन्न जलाशयों में 32 नंबर सिफ़री एचडीपीई पेन, सिफ़री केज ग्रो फीड, मछली बीज वितरित किया गया। झारखंड के 5 जिलों (रांची, हजारीबाग, लोहरदग्गा, सिमडेगा, खूंटी) के 13 ब्लॉकों में स्थित 17 जलाशयों के एससी और एसटी मछुआरों को इससे लाभ होगा । जलाशयों में से 8 नामत: करंजी, लोटवा, नंदिनी, बैमारी, कंजोर, रामरेखा, केलाघाग और लारबाहेव, चांडलसो को एसटीसी के तहत कवर किया गया है और 9 जलाशयों नामत: पेरखा, बोंडा, केरेदारी, घाघरा, जराहिया, कांके, हटिया और गेतालसूद को एससीएसपी के तहत कवर किया गया है। इन पेन का रखरखाव और प्रबंधन संबंधित जलाशयों से जुड़ी मछुआरों की सहकारी समितियों द्वारा किया जाता है। यह व्यापक कार्यक्रम सत्रह जलाशयों से 350 टन अधिक उत्पादन का उपयोग करने के लिए तैयार किया गया है। यह न केवल मछुआरों को अधिक आय प्राप्त करने में मदद करेगा, बल्कि यह झारखंड के खाद्य संपदा को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

संस्थान ने एससी और एसटी महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए घरेलू सजावटी मछली पालन भी शुरू किया है। इन कमजोर समुदायों की महिलाओं को सजावटी मत्स्य पालन से वैकल्पिक आय प्राप्त करने में सक्षमता हासिल होगी। इसके अलावा, संस्थान ने 'पोषक-मछली' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाने के लिए झारखंड के जलाशयों में पुंटियस सरना मॉडल पेश करने की योजना बनाई है। 17 नवंबर, 2021 को संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के. दास, ने रांची में इनपुट वितरण कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और उन्होंने झारखंड के मछली किसानों को आश्वासन दिया कि आने वाले दिनों में संस्थान उनकी आजीविका में सुधार के लिए उनकी मदद करेगा। डॉ. एच. एन. द्विवेदी, निदेशक मत्स्य पालन, झारखंड सरकार ने भी इस प्रयास में संस्थान के साथ हाथ मिलाया। निदेशक डॉ. बि.के.दास ने वैज्ञानिकों और तकनीकी अधिकारियों की एक टीम के साथ पेनकल्चर कार्यक्रम का प्रदर्शन करने के लिए गेतालसूद जलाशय में पेनकल्चर साइट का दौरा किया और पेन में स्टॉकिंग भी की। यह माना गया है कि इस सहायता कार्यक्रम से झारखंड के अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के मछुआरों को स्थायी रूप से मदद मिलेगी। पूरे कार्यक्रम का समन्वय संस्थान के वैज्ञानिकों की एक टीम द्वारा किया गया, जिसमें डॉ. ए.के. दास, डॉ. अपर्णा रॉय, डॉ. पी.के. परिदा और डॉ. राजू बैठा थे।

संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर ने वनविलास सागर जलाशय, चित्रदुर्ग जिला, कर्नाटक में "मछली में रोगाणुरोधी (एंटी-माइक्रोबियल) प्रतिरोध" पर "राष्ट्रीय अभियान" के तहत एक जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया

संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के समग्र मार्गदर्शन में वानीविलास सागर जलाशय, चित्रदुर्ग जिला, कर्नाटक में 23 नवंबर 2021 को क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर द्वारा "मछली में रोगाणुरोधी प्रतिरोध" पर "राष्ट्रीय अभियान" के तहत एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख तथा प्रधान वैज्ञानिक डॉ. प्रीता पणिक्कर ने अपने सहयोगी वैज्ञानिक डॉ. अजय साहा और तकनीकी अधिकारी डॉ. विजयकुमार एम.ई, द्वारा किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य "संस्कृति आधारित मत्स्य पालन में रोगाणुरोधी प्रतिरोध" पर अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालकों और मछुआरों को संवेदनशील बनाना है। कार्यक्रम में चित्रदुर्ग जिले के वनविलास सागर और गायत्री जलाशयों के 52 मछुआरों ने भाग लिया। डॉ. प्रीता पणिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख ने इस जागरूकता कार्यक्रम के महत्व के बारे में बताया और ऑडियो-विजुअल एड्स के उपयोग के साथ मछली के स्वास्थ्य के लिए रोगाणुरोधी प्रतिरोध के बढ़ते खतरे पर जोर दिया। डॉ. विजयकुमार एम.ई., तकनीकी अधिकारी ने मछलियों के प्रमुख रोगों, एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग, विशिष्ट मुद्दों पर विस्तृत प्रस्तुति दी। श्रीनिवास डी.एस., वरिष्ठ सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, कर्नाटक सरकार ने राज्य में प्रचलित विशिष्ट मुद्दों को प्रस्तुत किया। सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने बहुत उत्साह से बातचीत की। सहकारी समितियों के पदाधिकारियों ने कार्यक्रम के आयोजन में संस्थान द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की।

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के सहयोग से विश्व मत्स्य दिवस-2021 मनाया

संस्थान ने 21 नवंबर, 2021 को फरक्का में गंगा नदी के तट पर नदी मत्स्य पालन संरक्षण और स्थिरता की दिशा में एक प्रमुख कार्यक्रम के साथ विश्व मत्स्य दिवस -2021 मनाया। इस अवसर पर श्री. आर अझगेसन, महाप्रबंधक, फरक्का बैराज परियोजना, पश्चिम बंगाल, डॉ. संदीप बेहरा, जैव विविधता सलाहकार, एनएमसीजी, नई दिल्ली, इस अवसर पर उपस्थित थे। संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. डी.के. मीणा ने अपने स्वागत भाषण में अन्तर्स्थलीय खुले जल में स्वदेशी मछली प्रजातियों के संरक्षण की दिशा में संस्थान द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्यों पर प्रकाश डाला। इसके अलावा, डॉ. मीणा ने गंगा नदी में हिल्सा मत्स्य सुधार कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी जिसे 2 वर्षों पहले से शुरू किया गया

है। इस अवधि के दौरान, गंगा नदी के मध्य हिस्सों में हिल्सा मत्स्य पालन को फिर से स्थापित करने की दिशा में फरक्का बैराज के अपस्ट्रीम में कुल 15000 से अधिक वयस्क हिल्सा छोड़ी गई है। श्री आर. अझगेसन ने अपने संबोधन में मछुआरों को सलाह दी कि वे मछली पकड़ने और हिल्सा पकड़ने के लिए छोटे आकार के जाल का उपयोग न करें। श्री अझगेसन द्वारा मछली पकड़ने में विनाशकारी उपयोगों जैसे विष प्रयोग और बिजली प्रयोग आदि कानूनी मुद्दों पर भी जोर दिया गया। डॉ. संदीप बेहरा ने घटती मछलियों की आबादी और गंगा नदी के प्रदूषण पर चिंता व्यक्त की। डॉ. बेहरा ने फरक्का बैराज के अपस्ट्रीम में हिलसा की आबादी में कमी पर चिंता व्यक्त की और गंगा नदी में मछली प्रजातियों के संरक्षण की पहल पर एनएमसीजी द्वारा वित्त पोषित परियोजना के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने गंगा कायाकल्प के बारे में बताया और मछुआरों को हिल्सा के प्रवासित पथ को ठीक रखने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे भविष्य में बड़ी संख्या में मछलियां पकड़ सकें। डॉ. बेहरा ने संस्थान के टीम को निरंतर हिल्सा पालन और गंगा नदी में कम हुई हिलसा मत्स्य पालन के संरक्षण और पुनः स्थापित करने की दिशा में टैगिंग के लिए बधाई दी। इस विशेष दिन को चिह्नित करने के लिए, 1500 से अधिक मछुआरों और फरक्का बैराज के अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम से प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों ने भाग लिया। यह दिन अनूठा था, क्योंकि फरक्का में गंगा मशाल उत्सव दिवस के दिन के साथ यह कार्यक्रम किया गया था। गंगा मशाल के प्रमुख उद्देश्यों में से एक नदी के मत्स्य पालन और टिकाऊ मत्स्य प्रबंधन का संरक्षण करना है। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास के निर्देशन और सफल नेतृत्व में किया गया। डॉ. ए.के.साहू और डॉ. डी.के.मीणा और एनएमसीजी और फरक्का बैराज परियोजना (एफबीपी), पश्चिम बंगाल के अनुसंधान दल के सदस्यों के समर्थन से कार्यक्रम सफल हुआ ।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 22 नवमबर, 2021 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल में राजभाषा संबंधी निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 22-23 नवम्बर, 2021 तक कोलकाता, पश्चिम बंगाल के कार्यालयों का राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति का निरीक्षण किया। इसी क्रम में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर का दिनांक 22 नवम्बर, 2021 को राजभाषा कार्यान्वयन में हुई प्रगति का निरीक्षण किया।

निरीक्षण बैठक पूर्वाह्न 9.00 बजे शुरु की गई जिसमें संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक माननीया श्रीमती रंजनबेन धनजय भट्ट, समिति के अन्य माननीय सदस्य श्री दुर्गादास उइके तथा समिति सचिवालय के अवर सचिव श्री रमेशवर लाल मीणा, श्री कमल स्वरूप, अनुसंधान अधिकारी एवं श्री अनिल कुमार, रिपोर्टर उपस्थित थे। गणमान्य सदस्यों के अतिरिक्त निरीक्षण कार्यालय की ओर से डॉ. बि. के. दास, निदेशक, डॉ. श्रीकान्त सामन्ता, प्रभागाध्यक्ष एवं सर्वकार्यभारी, हिंदी कक्ष, श्री राजीव लाल, संयुक्त निदेशक (प्रशासन) सह कुलसचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. बी. पी. मोहान्ति, सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधि के रूप में श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधि के रूप में श्री मनोज कुमार, मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा) तथा निरीक्षण कार्यालय के अन्य अधिकारी

मोहम्मद कासिम, मुख्य तकनीकी अधिकारी, सुश्री सुनीता प्रसाद, सहायक मुख्य तकनीकी अधिका तथा श्रीमती सुमेधा दास तकनीकि सहायक उपस्थित थे।

निदेशक महोदय ने समिति के सदस्यों का स्वागत करते हुए संस्थान के अधिकारियों तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधियों का परिचय करवाया। निरीक्षण कार्यक्रम को देखते हुए आदरणीय निदेशक महोदय ने संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी, गंगा रैंचिंग आदि पर प्रस्तुति दी गयी। संसदीय समिति के गणमान्य सदस्यों ने बड़ी ही उत्सुकता के साथ इस पॉवर पॉइंट प्रस्तुति को देखा तथा विभिन्न तकनीकी के बारे में जानकारी ली। समिति के संयोजक माननीया श्रीमती रंजनबेन धनजय भट्ट ने संस्थान के प्रकाशन कार्यों की सराहना की।

निरीक्षण बैठक प्रारंभ होते ही संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक माननीया श्रीमती रंजनबेन धनजय भट्ट ने बताया कि राजभाषा समिति देश में विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों का निरीक्षण कर इनमें हिंदी भाषा में हो रहे कार्यों का आंकलन कर अपनी रिपोर्ट बनाकर गृह मंत्री के समक्ष पेश करती है तथा राजभाषा नियम, अधिनियम आदि की भी जानकारी दी।

निरीक्षण के दौरान तैयार प्रश्नावली के आधार पर सवाल किए गए । समिति के सदस्यों ने हिंदी में कार्य करने संबंधी कमियों को सुधारने के निर्देश दिए। प्रस्तुत रिकार्ड संतोषजनक रहा। राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु संस्थान द्वारा किये जा रहे प्रयासों पर माननीय सदस्यों ने संतोष व्यक्त किया। जो थोड़ी गलतियां सामने आई, उन्हें सुधारने के निर्देश दिए।भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप), नई दिल्ली के प्रतिनिधि डॉ. बी. पी. मोहान्ति, सहायक महानिदेशक (अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी) ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

संस्थान ने बिहार के नवादा जिले के मछुआरों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर द्वारा "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है और नवादा जिले, बिहार के कुल 29 मछुआरों ने 17-23 नवंबर, 2021 के दौरान इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया है। प्रशिक्षण का उद्देश्य था अन्तर्स्थलीय जल में स्थायी तरीके से मछली की उपज बढ़ाने के लिए प्रबंधन रणनीति का मूल्यांकन और सुधार। उद्घाटन सत्र में संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के. दास ने प्रतिभागियों का स्वागत किया, उनके साथ बातचीत की और उन्हें रोजगार और आजीविका सुरक्षा उत्पन्न करने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के ज्ञान और कौशल को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. दास ने मछुआरों को भारत के अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी में उपलब्ध नए उद्यमशीलता के अवसरों के बारे में जानकारी दी। एक सप्ताह तक चलने वाले इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मछली पालन के विभिन्न विषयों जैसे तालाब निर्माण और तैयारी, जल गुणवत्ता प्रबंधन, प्रेरित प्रजनन तकनीक, मिश्रित मछली पालन, नर्सरी और तालाब प्रबंधन, एसआईएफ के साथ मछली की पॉलीकल्चर पर विशेष जोर दिया गया। मछली रोग प्रबंधन, चारा तैयार करना और सजावटी मछली पालन तकनीक भी सिखाया गया। पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि में कल्चर सिस्टम के लिए जल गुणवत्ता विश्लेषण और फिश फीड तैयार करने के साथ-साथ प्रशिक्षुओं के फील्ड एक्सपोजर और खोलसी

बील में स्थापित पेन कल्चर सिस्टम की व्यावहारिकता भी दिखाई गईं। समापन सत्र 23 नवंबर, 2021 को आयोजित किया गया था, जो प्रशिक्षण कार्यक्रम का अंतिम दिन था, जहां निदेशक, डॉ. बि. के. दास के साथ विशेष अतिथि, डॉ. बी. पी. मोहंती, सहायक महानिदेशक (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), आईसीएआर उपस्थित थे। लगभग 93% किसानों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से उच्च स्तर की संतुष्टि प्राप्त हुई ऐसा

भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने आजादी का अमृत महोत्सव के तहत मछली में रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर राष्ट्रीय अभियान कार्यक्रम मनाया

रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) वैश्विक स्वास्थ्य और विकास के लिए खतरा है। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए इसे तत्काल बहुक्षेत्रीय कार्रवाई की आवश्यकता है। संस्थान ने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 22-24 नवंबर 2021 के दौरान मछली में रोगाणुरोधी प्रतिरोध पर राष्ट्रीय अभियान मनाया है। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास के नेतृत्व में मुख्यालय और अनुसंधान केंद्रों द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किए गए और उस राष्ट्रीय अभियान के दौरान लगभग 352903 मछुआरों, छात्रों, आम जनता को जागरूक किया गया। 22 नवंबर 2021 को आम जनता को जागरूक करने के लिए दो प्रमुख फेरी घाटों (श्रीरामपुर और श्योराफुली) पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान, एएमआर (अंग्रेजी, हिंदी और बंगाली) पर पर्चे वितरित किए गए और लोगों के बीच रोगाणुरोधी के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग के महत्व के बारे में बताया गया। करीब 980 पर्चे बांटे गए। एएमआर के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए 22 नवंबर 2021 को फरक्का में एक किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया था। किसानों ने एंटीबायोटिक दवाओं के जिम्मेदार उपयोग, रोगाणुरोधी प्रतिरोध के विकास और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव पर वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। इस कार्यक्रम में लगभग 180 मछुआरों, युवाओं, महिलाओं और छात्रों ने भाग लिया। 23 नवंबर 2021 को रानाबुतिया गांव, पंचपोटा पीओ, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि, पश्चिम बंगाल में जागरूकता शिविर आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में 395 पुरुषों और 112 महिलाओं सहित कुल 507 मछुआरों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का समन्वय संस्थान के वैज्ञानिकों की एक टीम डॉ. बी.के. बेहरा, डॉ. विकास कुमार, डॉ. पी.के. परिदा, श्रीमती तनुश्री बेरा और डॉ. एम. शाया देवी, तकनीकी कर्मचारी और शोधार्थीयों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्थान के एईबीएन विभाग के प्रभागाध्यक्ष डॉ. बी. के. बेहेरा ने दीप प्रज्वलित करके किया। प्रो. टी.जे. अब्राहम (डीन), प्रो. गदाधर दास, डब्ल्यू.बी.यू. ए. एफ. एस, कोलकाता और श्री प्रबीर सरकार, सामाजिक कार्यकर्ता, पूर्वी कोलकाता आर्द्रभूमि से इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान, टीम ने जलीय पर्यावरण के साथ-साथ रोगाणुरोधी प्रतिरोध मुद्दों, भारत में मीठे पानी के जलीय कृषि में मछली रोग प्रबंधन की स्थिति, जलीय कृषि विकास आदि विषयों पर सभा को साझा किया और ज्ञानवर्धन किया। वैज्ञानिक टीम ने मछुआरों के साथ भी मछली विकास, रोग और कृषि प्रबंधन से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की। 23 नवंबर, 2021 को आरकेएमवीईआरआई के धन्य गंगा केवीके द्वारा समर्थित सरगाछी मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल में एक अन्य कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। कुल 508 प्रतिभागियों में छात्र, संकाय, एसएचजी, डब्ल्यूएसएचजी, मछुआरे और युवा शामिल थे। स्वामी विश्वमयानंद जी, सचिव, आरकेएम, सरगाछी ने पवित्र दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए युवाओं को महामारी से प्रेरित देश के बदले हुए शासन के तहत आय के साधन के रूप में कृषि-उद्यमिता के माध्यम से खुद को नया रूप देते हुए आगे आने का आह्वान किया। डॉ. ए. के. दास, प्रधान वैज्ञानिक ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए छात्रों और युवाओं से ज्ञान और प्रौद्योगिकी संचालित वर्तमान कृषि और विशेष रूप से आने वाले युग में जीविका के साधन के रूप में मत्स्य पालन और जलीय कृषि में शामिल होने का आग्रह किया। डॉ. संजीब कुमार मन्ना, प्रधान वैज्ञानिक ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध- मछली और मानव स्वास्थ्य में इसके निहितार्थों को बहुत ही स्पष्ट तरीके से प्रस्तुत किया। 24 नवंबर 2021 को, मोयना रामकृष्णन एसोसिएशन के सहयोग से मोयना, पूर्वी मिदनापुर, पश्चिम बंगाल में एक जन जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित की गई थी। इस कार्यक्रम में छात्रों, किसानों और कॉलेज के व्याख्याताओं सहित लगभग 516 आम जनता ने भाग लिया। इस अवसर पर निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास भी उपस्थित थे। डॉ. दास ने बिना किसी संवेदनशीलता परीक्षण के एंटीबायोटिक दवाओं के याट्टच्छिक उपयोग के मुद्दे पर प्रकाश डाला, जो अंततः एएमआर और आवर्तक मछली रोग और संबंधित मृत्यु दर के कारण बड़े पैमाने पर आर्थिक नुकसान की ओर ले जाता है। डॉ. दास ने इस ज्वलंत मुद्दे पर एफएम 92.1 रेडियो चैनल में टैडियो टॉक के माध्यम से संवेदीकरण कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया, जो अंततः उस क्षेत्र के लगभग 3.5 लाख निवासियों को प्रसारित किया गया। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. ए. के. बेरा और डॉ. आर. के. मन्ना द्वारा जल गुणवत्ता परीक्षण, मछली रोग नमूना संग्रह और रोग निदान पर फील्ड गतिविधियों का भी आयोजन किया गया था। संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र बैंगलोर द्वारा 23 नवंबर 2021 को वनविलास सागर जलाशय, चित्रदुर्ग जिला, कर्नाटक में संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के.दास के समग्र मार्गदर्शन में एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रीता पणिक्कर, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. अजय साहा, वैज्ञानिक द्वारा किया गया। इस विषय पर कुल 52 लोगों को जागरूक किया गया। डॉ. एस. पी. कांबले, प्रभारी वडोदरा केंद्र और डॉ. वैशाक, वैज्ञानिक वडोदरा केंद्र ने 24.11.2021 को गुजरात के भमरिया गांव (पंचमहल जिला) के देव बांध में “मछली में रोगाणुरोधी प्रतिरोध” पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र गुवाहाटी द्वारा "मछली में रोगाणुरोधी प्रतिरोध" पर 24 नवंबर 2021 को लखनबंधा बील, नगांव, असम में एक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया था। क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज द्वारा संगम में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका संचालन प्रभारी प्रयागराज केंद्र डॉ. डी.एन. झा और डॉ. वी.आर. ठाकुर द्वारा किया गया। 87 से अधिक आम जनता को जागरूक किया गया।

24-26 नवंबर, 2021 के दौरान लखनबंधा बील, नगांव, असम में आयोजित 'बाढ़ के मैदानों में उत्पादन और आजीविका बढ़ाने के लिए घेरों में मत्स्य पालन' पर गैर-आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

लखनबंधा बील, नागांव, असम में 24-26 नवंबर, 2021 के दौरान भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा 'बाढ़ के मैदानों में उत्पादन और आजीविका बढ़ाने के लिए घेरों में मत्स्य पालन' पर एक गैर-आवासीय ऑन-फील्ड प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किया गया था। कार्यक्रम में असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड के अधिकारियों, बील विकास और प्रबंधन समिति के सदस्यों, मछुआरों और मछली किसानों सहित कुल 58 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. दीपेश देबनाथ, वरिष्ठ वैज्ञानिक और सिमंकू बोरा, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा किया गया। डॉ. एस. बोरा ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम की पृष्ठभूमि और उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बताया। 3 दिवसीय ऑन-फील्ड प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान पेन कल्चर और बील मात्स्यिकी प्रबंधन के कई पहलू जैसे बाढ़ के मैदानों में मत्स्य पालन बढ़ाने के विकल्प, बाढ़ के मैदानों में पेन कल्चर, पेन कल्चर के लिए मिट्टी और पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, पेन में फीडिंग और फीड मैनेजमेंट, घेरों में पालन आदि की तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता को कवर किया गया। व्याख्यान डॉ. डी. देबनाथ, डॉ. सोना येंगकोकपम (वरिष्ठ वैज्ञानिक), श्री ए.के. यादव, डॉ. एस. बोरा और सुश्री नीति शर्मा (वैज्ञानिक) केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी। असम के मोरीगांव जिले के 47-मोराकोलोंग बील में एक दिवसीय फील्ड विजिट का आयोजन किया गया था ताकि बील्स में पेन कल्चर के लिए मछुआरों को व्यावहारिक रूप से अवगत कराया जा सके।

भारत का अमृत महोत्सव के अवसर पर डॉ. दिलीप कुमार पूर्व निदेशक/कुलपति,भा. कृ. अनु. प. - केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान का, संस्थान के प्लेटिनम जयंती वर्ष द्वतीय व्याख्यान

भारत के स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में भारत का अमृत महोत्सव और भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की स्थापना के

75वें वर्ष में संस्थान में व्याख्यान श्रृंखला रखी गई है। प्रथम व्याख्यान, दिनांक 3 अगस्त 2021 को ऑनलाइन मोड में प्रख्यात मात्स्यिकी वैज्ञानिक, डॉ. एस. अय्यप्पन, पूर्व सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने दिया था। इसी क्रम में द्वतीय व्याख्यान डॉ. दिलीप कुमार पूर्व निदेशक / कुलपति भा. कृ. अनु. प. - केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा, ने दिनांक 28 अक्टूबर 2021 को अपना व्याख्यान "इंडियन फिशरीजः इंट्रोइंस्पेक्शन टू कोर्स करेक्शन (भारतीय मत्स्य पालनः कार्यप्रणाली सुधार के लिए आत्मनिरीक्षण)" शीर्षक पर दिया। इस सत्र में माननीय ऍम. वी. गुप्ता, विश्व खाद्य पुरस्कार विजेता, मात्स्यिकी जगत के गणमान्य वैज्ञानिक, संस्थान के पूर्व निदेशकगण, संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी और मत्स्य पालन से जुड़े किसान आदि ने भाग लिया।

व्याख्यान सत्र के आरंभ में संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने डॉ. दिलीप कुमार का स्वागत करते हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों को संस्थान की विकास यात्रा के बारे में संक्षेप में बताया।

डॉ. दिलीप कुमार ने अपने शोध करियर की शुरुआत जलीय कृषि एवं एकीकृत मछली पालन के क्षेत्र में भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान में की थी यहाँ जलीय कृषि और मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रयोगशाला और क्षेत्र आधारित अनुसंधान और विकास परियोजनाओं कार्य किया। तत्पश्चात भाकृअनुप-सीफा में मत्स्य स्वास्थ्य के क्षेत्र में मछली कोशिका रेखा विकसित कर मत्स्य रोग निदान में मछली विषाणु विज्ञान के लिए उपयोग किया। इसके बाद में संयुक्त राष्ट्र-एफएओ और एनएसीए (एशिया-प्रशांत में जलीय कृषि केंद्रों का नेटवर्क) में जाकर मुख्य रूप से क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से एनएसीए सदस्य देशों के बीच जलीय कृषि प्रशिक्षण और अनुसंधान को बढ़ावा दिया। इस अवधि के दौरान उन्होंने "एनएसीए-एफएओ-ओआईई" एशिया क्षेत्रीय कार्यक्रम "जीवित जलीय जानवरों के सीमा पार गमना गमन और रोग रिपोर्टिंग प्रणाली" पर का संचालन किया। अंतरराष्ट्रीय कार्यभार छोड़ने के बाद देश में आकर भा. कृ. अनु. प. - केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान , मुंबई के निदेशक / वीसी के रूप में कार्यभार ग्रहण और 2010 में सेवानिवृति ली वर्तमान में वर्तमान में वह बिहार पशु विज्ञान और मत्स्य विश्वविद्यालय (BASU) के एक नए मत्स्य पालन महाविद्यालय की स्थापना के लिए सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- गंगा नदी में भारतीय प्रमुख कार्प (रोहू, कतला और मृगल) के कृत्रिम रूप से पैदा हुए लगभग 2.30 लाख वन्य जर्मप्लाज्म को बेलूर मठ, हावड़ा से, पवित्र गंगा और यमुना नदियों के संगम पर बहा दिया गया।
- पांच हजार पांच सौ नौ (5509) हिल्सा मछलियों का पालन किया गया, जिनमें फरक्का बैराज के अपस्ट्रीम में 183 टैग (वजन, 31 -445 ग्राम) शामिल हैं।
- अक्टूबर 2021 के महीने में गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली के लैन्डिंग का अनुमान 06.304 टन लगाया गया।
- पिछले महीने की तुलना में कुल मछली पकड़ने में लगभग 4.62% की कमी आई है। अक्टूबर से नवंबर 2021 तक बैरकपुर में 0.081 टन और गंगा नदी के पटना खंड में 0.419 टन मछली लैन्डिंग का अनुमान लगाया गया था।
- सिलचर (कछार जिला, असम) में बराक नदी में औसत सीपीयूई हुक और लाइन मछली पकड़ने के लिए 0.88 - 3.4 किग्रा / नाव / दिन के बीच था, और *कैटफ़िश, रीता रीता* (51.35%) का प्रभुत्व था। इसके बाद *स्परेटा एओआर* (20.3%) और *क्लूपिसोमा गरुआ* (16.22%) का स्थान आता है।
- वर्ष 2012 से 2020 तक गोबिंदसागर जलाशय, हिमाचल प्रदेश में मछली उत्पादन और जल भंडारण स्तर के बीच संबंध का अध्ययन किया गया और एक सकारात्मक संबंध पाया गया (आर = 0.640 और पी = 0.064), जो यह दर्शाता है कि पानी की मात्रा कम होने के करण हाल के वर्षों में जलाशय में मछली उत्पादन में कमी आई हैं।
- मणिपुर के कामजोंग जिले के मैपिथेल बांध की पारिस्थितिकी और मत्स्य पालन पद्धति से पता चला जलाशय में कुल 32 मछली प्रजातियां हैं, जिनमें से तीन प्रजातियां विदेशी कार्प थीं जैसे_ *साइप्रिनस कार्पियो, हाइपोफथाल्मिचथिस मोलिट्रिक्स* और *ओरियोक्रोमिस मोसाम्बिकस*। छोटे स्वदेशी मछलियों में जैसे *पुंटियस एसपीपी. , मिस्टस नगासेप, गगाटा एसपी.* कैच में हावी पाए गए।

बैठकें

- संस्थान ने 02.11.21 और 09.11.21 को वर्चुअल मोड के माध्यम से मत्स्य पालन विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित भारत में विदेशी जलीय प्रजातियों के परिचय पर राष्ट्रीय समिति की बैठकों में भाग लिया।
- संस्थान ने 18 नवंबर से 19 नवंबर 2021 तक भुवनेश्वर, ओडिशा में माननीय महानिदेशक के साथ “सटीक कृषि पद्धति” पर पहली संचालन समिति की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 28 अक्टूबर 2021 को माननीय महानिदेशक, आईसीएआर से बातचीत करने के लिए बैठक में भाग लिया।

अन्य

- संस्थान ने 19 अक्टूबर 2021 को गंगासागर में एससीएसपी के तहत जन जागरूकता कार्यक्रम और मत्स्य संबंधी सामग्री के वितरण का आयोजन किया।

- संस्थान ने 20 अक्टूबर 2021 को नेशनल ज्योग्राफिक टीम द्वारा हिल्सा पर फिल्म की शूटिंग के दौरान सैंपलिंग और रैंचिंग की।
- संस्थान ने 23 अक्टूबर 2021 को नेशनल ज्योग्राफिक चैनल टीम के साथ गंगा नदी में हिल्सा मत्स्य पालन पर एक लघु फिल्म की शूटिंग में भाग लिया।
- संस्थान ने 1 से 3 नवंबर 2021 तक प्रयागराज क्षेत्रीय केंद्र के साथ एनएमसीजी परियोजना के तहत 'गंगा उत्सव-2021' मनाया। इस आयोजन को महत्वपूर्ण बनाने के लिए, संस्थान ने इस अवधि के दौरान तीन दिवसीय विशाल गतिविधियों का आयोजन किया था।
- संस्थान ने 1 नवंबर 2021 को बरेंद्रपारा घाट, बेलूर मठ, हावड़ा में 'गंगा उत्सव' के अवसर पर नदी और पशुपालन कार्यक्रम का आयोजन

किया। इस कार्यक्रम में रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान के कुलपति श्री स्वामी आत्मप्रियानंद जी महाराज उपस्थित थे।

- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने 1 नवंबर 2021 को लेटे हुए हनुमान मंदिर से संगम नाक, प्रयागराज तक चलने वाले गंगा मशाल (लालटेन) का आयोजन किया।
- संस्थान ने 10 नवंबर, 2021 को सागर द्वीप, सुंदरबन, दक्षिण 24 परगना में अनुसूचित जाति उप-योजना और अनुसूचित जनजाति

उपयोजना घटक के तहत जागरूकता सह मत्स्य वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया।

- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 13 से 16 नवंबर 2021 तक बीएचयू वाराणसी में आयोजित 15वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस के सत्र में लेख की मौखिक प्रस्तुति में भाग लिया। इस विज्ञान कांग्रेस में संस्थान की वैज्ञानिक डा. (श्रीमती) सजींना ए ऍम. को अपने शोध पत्र "ससटेनेब्ल हरनेस्सिंग एंड मैनेजमेंट ऑफ़ रेसेर्विएर फिशरीज एंड कांजेरवेशन (जलाशय मत्स्य पालन और संरक्षण के मुद्दों का सतत दोहन और प्रबंधन: एक केस स्टडी)" के लिए सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार से सम्मानित किया गया

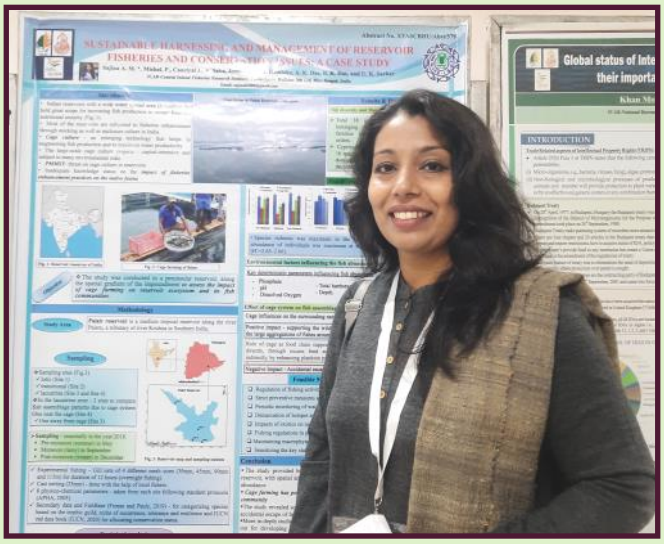

- संस्थान ने 17 नवंबर, 2021 को झारखंड के मछली किसानों को उनकी आजीविका में सुधार के लिए पेन में इनपुट वितरित किए।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने रामघाट पर गंगा आरती और दीपदान किया और 2 नवंबर 2021 को गंगा प्रतिज्ञा ली गई।
- संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने गंगा सम्मेलन (गोष्ठी) का आयोजन मिंटो पार्क, प्रयागराज में 3 नवंबर 2021 को गंगा को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखने के लिए लोगों को जागरूक करने के लिए किया।

• संस्थान ने 18 नवंबर 2021 को नई दिल्ली में 'अग्री फूड (कृषि-खाद्य) सशक्तिकरण भारत पुरस्कार 2021' में अनुसंधान एवं विकास में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रशिक्षण

• संस्थान ने 1 से 3 नवंबर 2021 तक तेरह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए और गंगा नदी में गंगा की मछली, हिल्सा और डॉल्फिन के संरक्षण के लिए 800 लोगों को जागरूक किया।

• संस्थान ने 1 नवंबर 2021 को गंगा, हिल्सा और डॉल्फ़िन की स्वदेशी प्रजातियों के संरक्षण के साथ-साथ गंगा संसाधनों के संरक्षण के लिए कृष्णानगर और जिबोंटाला, सागर द्वीप, दक्षिण 24 परगना में एक जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इस जागरूकता कार्यक्रम में 350 लोगों ने भाग लिया।

• संस्थान ने आकाशबनी मैत्रेई चैनल 594 मेगावाट (कोलकाता) और बिग एफएम चैनल पर गंगा उत्सव-2021 के बारे में आयोजित रेडियो वार्ता में भाग लिया जिसका विषय गंगा में हिल्सा और गंगा की सफाई से मछली के स्टॉक में सुधार था। भारत और बांग्लादेश में लगभग 25.28 मिनट में यह कार्यक्रम प्रसारित किया गया। यह कार्यक्रम लगभग 17.5 लाख श्रोतायों तक पहुंच चुका है।

• संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने 09-11 नवंबर 2021 के दौरान असम मात्स्यिकी विकास निगम लिमिटेड, गुवाहाटी के सहयोग से रूपही बील, नागांव जिला, असम में "बील में मात्स्यिकी वृद्धि के विकल्प" पर ऑन-फील्ड प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में कुल 35 सक्रिय मछुआरों ने भाग

लिया।

• संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज ने 13-16 नवंबर 2021 के दौरान XV कृषि विज्ञान कांग्रेस के अवसर पर बीएचयू, वाराणसी में आयोजित चार दिवसीय प्रदर्शनी में भाग लिया।

• गंगा, हिल्सा और डॉल्फिन की स्वदेशी मछली प्रजातियों के संरक्षण के साथ-साथ गंगा संसाधनों के बारे में गंगा नदी के किनारे मछुआरों सहित स्थानीय लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए संस्थान ने 17 नवंबर 2021 को बालागढ़ में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इस जागरूकता कार्यक्रम में 50 लोगों ने भाग लिया।

• संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने एनईएच घटक के तहत 02 नवंबर 2021 को सरेन, बक्सा असम के आदिवासी मछुआरों के लिए "सिफ़री केज ग्रो फीड का उपयोग" सह "फीड वितरण" पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कुल 3 टन चारा वितरित किया गया जिससे 100 से अधिक मछुआरों को लाभ हुआ।

सिफरि समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

बेलूर मठ घाट पर एक लाख से अधिक मछली प्रजातियों के जर्मप्लाज्मा को गंगा नदी में छोड़ा

सिफरी, बैरकपुर में गंगा उत्सव-2021 का आयोजन

बैरकपुर कोलकता » दबंग रिपोर्टर

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में 1 से 3 नवंबर के दौरान 'गंगा उत्सव- 2021' मनाया गया। गंगा पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण की दिशा में स्वच्छ गंगा राष्ट्रीय मिशन द्वारा वित्त पोषित 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के तहत संस्थान द्वारा मछलियों की रैंचिंग, जन जागरूकता कार्यक्रम और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

संस्थान गंगा नदी में मछलियों के स्टॉक को पुनरुद्धार करने और मत्स्य प्रजातियों, हिलसा प्रजाति तथा नदीय डॉल्फिन के संरक्षण और गंगा नदी को स्वच्छ बनाने के लिए व्यापक तौर एक पायलट परियोजना के तहत देश के चार अलग-अलग राज्यों के 18 सैंपलिंग स्थलों पर कार्य कर रहा है।

विश्व भर में नदी संरक्षण की दिशा में नदी उत्सव का आयोजन एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है। इसी क्रम में जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार प्रति वर्ष गंगा उत्सव का आयोजन करता रहा है। गंगा उत्सव का मुख्य उद्देश्य हितधारकों की सक्रिय और सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के साथ गंगा नदी और इसकी मात्स्यिकी के पुनरुद्धार में 'जनभागीदारी' को बढ़ावा देना है। इस उत्सव में गंगा नदी की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत जैसे पहलुओं के साथ गंगा नदी के वर्तमान परिदृश्य को प्रदर्शित करना है। सिफरी ने भी नमामि गंगे, जल शक्ति मंत्रालय के साथ इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों, हिल्सा और नदी डॉल्फिन संरक्षण के लिए जागरूकता फैलाने के साथ गंगा उत्सव-2021 को भव्य तरीके आयोजित किया है।

इस कार्यक्रम के तहत एक नवंबर को इस गंगा उत्सव कार्यक्रम में रामकृष्ण मिशन के कुलपति, विवेकानंद शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान और स्थानीय और सहकारी समिति के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का आरंभ गंगा आरती के साथ हुआ। इसके बाद, संस्थान के निदेशक, डॉ. बसंत कुमार दास ने स्थानीय मछुआरों से गंगा नदी की मछलियों और नदीय डॉलफिन के संरक्षण तथा पुनरुद्धार गंगा के स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर पश्चिम बंगाल के बेलूर मठ घाट पर एक लाख से अधिक मछली प्रजातियों (रोहू, कतला और मृगल) के जर्मप्लाज्मा को गंगा नदी में छोड़ा गया।

दो नवंबर को पश्चिम बंगाल के त्रिवेणी से बैरकपुर तक गंगा नदी में जन जागरूकता अभियान चलाया गया गया। कार्यक्रम में कोविड-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए विभिन्न घाटों पर मास्क व सैनिटाइजर का भी वितरण किया गया।

একদিন KOLKATA EDITION - 04 Nov 2021 - Page 2

গঙ্গা উৎসব উপলক্ষে ব্যারাকপুর সিফ্রির ... ও মৎসজীবীদের সচেতনতা প্রচার

নিজস্ব প্রতিবেদন, ব্যারাকপুর:১লা নভেম্বর থেকে ৩ নভেম্বর পর্যন্ত উদযাপিত হচ্ছে গঙ্গা উৎসব-২০২১। ব্যারাকপুরস্থিত ভারতীয় কৃষি অনুসন্ধান পরিষদের অধীনস্থ কেন্দ্রীয় অন্তর্দেশীয় মৎস গবেষণা কেন্দ্র তথা সিফ্রি-র উদ্যোগে 'গঙ্গা উৎসব-২০২১' উদযাপন করা হচ্ছে। কেন্দ্রীয় সরকারের গঙ্গা নদীর দূষণ নিয়ন্ত্রণ ও গঙ্গার বাস্তুতন্ত্র সংরক্ষণকে সুনিশ্চিত করার লক্ষে ' ন্যাশনাল মিশন ফর ক্লিন গঙ্গা' নামক জাতীয় প্রকল্পের সহায়তায় চলা 'নমামি গঙ্গা' প্রকল্পের অধীনে সিফ্রি এই উৎসবের আয়োজন করেছে। গঙ্গা উৎসবের মূল উদ্দেশ্যে, স্বল্প জন ভাগিদারীক্ষ্ম অর্থাৎ গঙ্গা নদীকে পুনরুদ্ধারের উদ্দেশ্যে এই নদীর সঙ্গে যুক্ত অংশীদারদের যোগদান। সেইসঙ্গে জনসাধারণকে আরও বেশি করে অংশগ্রহণে উৎসাহিত করা। গত ১ লা নভেম্বর বেলুড় মঠস্থিত গঙ্গার ঘাটে রুই, কাতলা, মৃগেল মাছের চারা ছেড়ে উৎসবের সূচনা করা হয়। হাজির ছিলেন ব্যারাকপুর কেন্দ্রীয় অন্তর্দেশীয় মৎস গবেষণা কেন্দ্রের মহানির্দেশক ড বসন্ত কুমার দাস। বুধবার ত্রিবেনী থেকে ব্যারাকপুর পর্যন্ত গঙ্গার ঘাটগুলোতে মৎস জীবীদের মধ্যে সচেতনতার প্রচার চালানো হয়। আজ, বৃহস্পতিবার কেন্দ্রীয় অন্তর্দেশীয় মৎস গবেষণা কেন্দ্রের মুখ্য কার্যালয়ে গঙ্গা নদী সংরক্ষনের ওপর একটি সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানের আয়োজন করা হয়েছে।

ବରେନ୍ଦ୍ରପଡ଼ାରେ 'ସିଫ୍ରି' ପକ୍ଷରୁ 'ଗଙ୍ଗା ଉତ୍ସବ'

ଫଟୋ : ଯୋଗେନ୍ଦ୍ର ଧଳ

କଲକାତା, ୨।୧୧ (ନି.ପ୍ର): ଗଙ୍ଗା ଉତ୍ସବ ସମଗ୍ର ଭାରତବର୍ଷରେ ପାଳନ କରାଯାଉଥିବାବେଳେ ଆଜି ଅନ୍ତସ୍ଥଳୀୟ ମତ୍ସ୍ୟ ଗବେଷଣା କେନ୍ଦ୍ର 'ସିଫ୍ରି' ପକ୍ଷରୁ ବେଲୁଡ଼ ମଠ ସଂଲଗ୍ନ ବରେନ୍ଦ୍ରପଡ଼ା ଘାଟଠାରେ ଗଙ୍ଗା ଉତ୍ସବ ପାଳନ କରାଯାଇଛି। ଗଙ୍ଗା ପୂଜା ସହିତ ଗଙ୍ଗାକୁ ପ୍ରଦୂଷଣମୁକ୍ତ କରିବା ପାଇଁ ସିଫ୍ରି କର୍ମକର୍ତ୍ତା ଓ ମତ୍ସ୍ୟଚାଷୀମାନେ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ପାଳନ କରିଥିଲେ। ସିଫ୍ରି ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଡକ୍ଟର ବସନ୍ତ କୁମାର ଦାସଙ୍କ ପୌରୋହିତ୍ୟରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ଏହି ଉତ୍ସବକୁ ବେଲୁଡ଼ ମଠର ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ ଶିକ୍ଷା ପ୍ରତିଷ୍ଠାନର ଉପାଚାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ୱାମୀ ଆତ୍ମପ୍ରିୟାନନ୍ଦ ... କହିଥିଲେ ଯେ ଗଙ୍ଗାକୁ ଆମେ ମାଆଙ୍କ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଦେଇଥାଉ, କିନ୍ତୁ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ବ୍ୟତିକ୍ରମୀ ରୂପ ଦିଆଯାଇଥାଏ। ତାଙ୍କର ବକ୍ତବ୍ୟ ଥିଲା ଯେ ସାଂପ୍ରତିକ ପରିବେଶରେ ଶାନ୍ତିରେ ରହିବା ପାଇଁ ସେଭଳି ବାତାବରଣ ତିଆରି କରିବା ଉଚିତ୍।

ସିଫ୍ରି ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଡକ୍ଟର ବସନ୍ତ କୁମାର ସାହୁ କହିଛନ୍ତି ଯେ ସିଫ୍ରି ପକ୍ଷରୁ ଗଙ୍ଗା ଉତ୍ସବ ପାଳନ ମାଧ୍ୟମ ଦେଇ ମତ୍ସ୍ୟ ଚାଷୀଙ୍କ ବିକାଶ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ପାଳନ କରାଯାଉଛି। ଆଜିର ଏହି ଗଙ୍ଗାଉତ୍ସବ ପାଳନ ମାଧ୍ୟମ ଦେଇ ଦୁଇ ଲକ୍ଷ ମାଛ ଜାଆଁଳ ଗଙ୍ଗାରେ ଛଡ଼ା ଯାଇଛି। ଏହା ସହିତ ଗଙ୍ଗାକୁ କିଭଳି ପ୍ରଦୂଷଣମୁକ୍ତ ... ସର୍ବୋପରି ସଚେତନ ସୃଷ୍ଟି ନିମିତ୍ତ ସିଫ୍ରି ଯେଉଁ ଭୂମିକା କରିଛି ତାହା ପ୍ରଶଂସନୀୟ। ମାଛ ଚାଷର ପ୍ରସାର ଘଟାଇବା ପାଇଁ ସିଫ୍ରି ପକ୍ଷରୁ ବହୁବିଧ ପଦକ୍ଷେପ ନିଆଯାଇଛି।

ମତ୍ସ୍ୟବିଜ୍ଞାନ ଡକ୍ଟର ହିମାଂଶୁ ସ୍ୱାଇଁ ଆଜିର ଏହି ଗଙ୍ଗା ଉତ୍ସବ ପାଳନର ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରସଙ୍ଗକୁ ଉପସ୍ଥାପନ କରିବା ସହିତ ଏହାକୁ କିପରି ବାସ୍ତବ ରୂପ ଦେଇହେବ ସେଥିପାଇଁ ଆହ୍ୱାନ କରିଥିଲେ। ମତ୍ସ୍ୟ ବିଜ୍ଞାନୀ ଡକ୍ଟର ବିକେ ବେହେରା, ଡକ୍ଟର ଅମାୟ କୁମାର ସାହୁ, ଡକ୍ଟର ହିମାଂଶୁ ଶେଖର ସ୍ୱାଇଁ, ଡକ୍ଟର ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର କୁମାର ମୀନା, ଡକ୍ଟର ଗୀତେଶ ରାଜ ସେକେ ପ୍ରମୁଖ ଉପସ୍ଥିତ ଥିଲେ। ଭାରତସରକାର ...

মহানগর

सिफरी द्वारा गंगा नदी में तीस हजार मत्स्य बीज को छोड़ा गया

मछुआरों की आय बढ़ाने हेतु सिफरी के प्रयास

बैरकपुर » दबंग रिपोर्टर

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान सुंदरबन के सागर द्वीप में चक्रवात पीड़ित अनुसूचित जाति और जनजाति के मछुआरों को सहायता के लिए सदैव ही तत्पर रहा है। संस्थान मछुआरों के आजीविका उन्नयन हेतु वैज्ञानिक तकनीकों के माध्यम से उनकी आय को दोगुना करने इस किसानों को मछली बीज, चूना, चारा और दवा आदि सामग्री प्रदान करता है। इस क्रम में संस्थान ने दिनांक 10 नवंबर 2021 सागर द्वीप में गंगासागर के 14 गांवों और पांच ग्राम पंचायतों के लाभार्थियों (350 मछुआरे) को दो स्थानों, जिबोंतला (150 मछुआरे) और कृष्णानगर (200 मछुआरे) को सम्मिलित किया गया था। इन मछुआरों को लगभग 36 टन मछली फीड, 100 लाख मछली बीज और ... हुए संस्थान के निदेशक, डॉ. बि के दास ने वैज्ञानिक विधि द्वारा मछली पालन से किसानों की आय को दोगुना करने और प्राप्त सामग्री का उचित उपयोग करने पर जोर दिया। अनुसूचित जाति और जनजाति कार्यक्रम के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. ए के दास, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. पी के परिदा, वैज्ञानिक ने मछली उत्पादन और मछुआरों की आय को दोगुना करने संबंधित तकनीकी विवरण पर विस्तृत चर्चा की। श्रीमती नमिता ... आय बढ़ाने के लिए प्राप्त संसाधनों के उचित उपयोग पर सलाह दिया। इस कार्यक्रम के माध्यम से मछुआरों को लाभ के साथ उनका आर्थिक स्तर में भी सुधार होगा।

निदेशक महोदय ने श्री बंकिम हाजरा, माननीय मंत्री, सुंदरबन क्षेत्र विकास, पश्चिम बंगाल सरकार को गंगासागर के मछली किसानों के विकास के लिए सिफरी के पहल और कार्य योजनाओं के बारे में अवगत कराया। कार्यक्रम का आयोजन स्वामी विवेकानंद युवा ...

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है